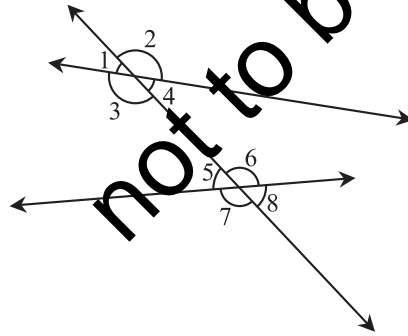


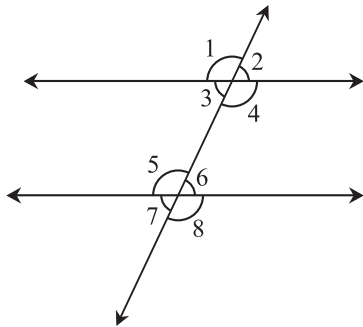
2. एक कोण का निर्माण तब होता है जब दो रेखाएँ (अथवा किरण अथवा रेखाखंड) एक दूसरे को मिलती हैं।

कोण युग्म	प्रतिबंध
दो पूरक कोण	मापों का योग 90° है।
दो संपूरक कोण	मापों का योग 180° है।
दो आसन्न कोण	एक उभयनिष्ठ शीर्ष और एक उभयनिष्ठ भुजा होती है। परंतु कोई उभयनिष्ठ अंतस्थ नहीं होता है।
रैखिक युग्म	आसन्न एवं संपूरक

3. जब दो रेखाएँ l और m एक दूसरे से मिलती हैं तो हम कहते हैं कि ये रेखाएँ **प्रतिच्छेद** करती हैं। मिलान बिंदु प्रतिच्छेद बिंदु कहलाता है। ऐसी रेखाएँ जिन्हें कितना भी बढ़ाया जाए, आपस में नहीं मिलती, **समांतर रेखाएँ** कहलाती हैं।
4. (i) जब दो रेखाएँ प्रतिच्छेद करती हैं (सामान्यतः, अक्षर V का भाँति दिखाई देती हैं) तो हमें सम्मुख कोणों के दो युग्म प्राप्त होते हैं। इन्हें **सममुख कोण** कहा जाता है। इनका माप समान होता है।
- (ii) दो अथवा अधिक रेखाओं का विभिन्न बिंदुओं पर प्रतिच्छेद करने वाली रेखा **तिर्यक छेदी रेखा** कहलाती है।
- (iii) एक तिर्यक छेदी रेखा आरेख से विभिन्न प्रकार के कोण प्राप्त होते हैं।
- (iv) आकृति में हमें मिलता है।



कोणों के प्रकार	दर्शाने वाले कोण
अंतः	$\angle 3, \angle 4, \angle 5, \angle 6$
बाह्य	$\angle 1, \angle 2, \angle 7, \angle 8$
संगत	$\angle 1$ तथा $\angle 5, \angle 2$ एवं $\angle 6, \angle 3$ तथा $\angle 7, \angle 4$ एवं $\angle 8$
अंतः एकांतर	$\angle 3$ तथा $\angle 6, \angle 4$ एवं $\angle 5,$
बाह्य एकांतर	$\angle 1$ तथा $\angle 8, \angle 2$ एवं $\angle 7,$
तिर्यक छेदी रेखा के एक ही तरफ़ बने अंतः कोणों के युग्म,	$\angle 3$ तथा $\angle 5, \angle 4$ एवं $\angle 6,$



- (v) जब एक तिर्यक छेदी रेखा दो समांतर रेखाओं को काटती है, तो हमें निम्नलिखित रुचिकर संबंध प्राप्त होते हैं। **संगत कोणों का प्रत्येक युग्म समान होता है:** $\angle 1 = \angle 5, \angle 3 = \angle 7, \angle 2 = \angle 6, \angle 4 = \angle 8$
अंतः एकांतर कोणों के युग्म समान होते हैं: $\angle 3 = \angle 6, \angle 4 = \angle 5$
तिर्यक छेदी रेखा के एक ही तरफ़ बने अंतः कोणों का प्रत्येक युग्म संपूरक होता है: $\angle 3 + \angle 5 = 180^\circ, \angle 4 + \angle 6 = 180^\circ$